



अपने पुर्नजन्म के बारे में परम पावन चौदहवें दलाई लामा  
तेनजिन ग्यात्सो जी का बयान

Statement of  
His Holiness the Fourteenth Dalai Lama, Tenzin Gyatso,  
on the Issue of His Reincarnation

परम पावन चौदहवें दलाई लामा

तेनजिन ग्यात्सो द्वारा निर्वासित

एवं

तिब्बत के भीतर रह रहे

तिब्बतियों सहित तिब्बती बौद्ध परम्परा  
के भिक्षु-भिक्षुणियों, उपासक-उपासिकाओं,

गृहस्थों तथा

तिब्बत एवं तिब्बती बौद्धधर्म से सम्बद्ध

समस्त

अनुयायियों के लिए की गयी

महत्वपूर्ण उद्घोषणा



## परिचय

हिमवान धर्मभूमि भोटदेश में पूर्व के राजाओं, आचार्यों, पण्डितों एवं सिद्धों की कृपा से तीन यानों तथा चार तन्त्रवर्गों द्वारा संगृहीत सम्पूर्ण बुद्ध के आगम-अधिगम वाले शासनरत्न तथा उससे सम्बन्धित समस्त विद्या स्थानों का गम्भीरतापूर्वक व्यापक प्रचार-प्रसार हुआ। सामान्य तौर पर यह विश्व तथा विशेषकर पूर्वी महाद्वीप में प्रमुखतया बौद्धधर्म तथा अध्यात्म विद्या-स्थानों का स्त्रोत हो गया और चीन, तिब्बत, मंगोलिया तीनों देशों के असंख्या लोगों ने तात्कालिक एवं स्थायी हित-सुख के सम्पादन में महत्वपूर्ण एवं सार्थक योगदान दिया।

इस प्रकार के बौद्धशासन के संरक्षण, संवर्धन एवं प्रसार के ऐतिहासिक विकासक्रम में विद्वान्-सिद्ध दोनों से युक्त अनेक महापुरुषों के पुनर्जन्म के पहचान की एक असाधारण तिब्बती परम्परा प्रचलित हुई, जिससे बौद्धशासन तथा बौद्धसंघ आदि को अपरिमित लाभ हुआ।

पन्द्रहवीं शताब्दी में सर्वज्ञ गेदुन ग्यात्सो की पहचान जे-गेदुन डुबपा के पुनर्जन्म के रूप में निश्चितता प्राप्त होने के उपरान्त की गयी, जिसके फलस्वरूप, गादेन फोडङ् संस्था की स्थापना हुई। तबसे लेकर क्रमशः दलाई लामाओं के पुनर्जन्म के पहचान की परम्परा प्रारम्भ हुई और तीसरे पुनर्जन्म सोनम ग्यात्सो को तलाई लामा (दलाई लामा) की उपाधि प्राप्त हुई। पाँचवें दलाई लामा डवङ् लोसङ् ग्यात्सो ने गादेन फोडङ् सरकार की सत्ता ग्रहणकर तिब्बत के धार्मिक एवं राजनैतिक दोनों का नेतृत्व किया। तबसे आजतक छह सौ से भी अधिक वर्षों के दौरान दलाई लामा के क्रमिक पुनर्जन्मों की पहचान प्रामाणिक तरीके से हुई है। वर्ष 1642 में गादेन फोडङ् सरकार की स्थापना के साथ ही दलाई लामाओं के पुनर्जन्म द्वारा तिब्बत के राजनैतिक नेतृत्व की परम्परा को 369 वर्ष हो गये, जिसका मैंने समस्त विश्व प्रचलित हो रहे लोकतान्त्रिक महामार्ग के माध्यम से खुशी एवं गर्व के समथ अग्रसर होने की आकांक्षा से समापन किया और

भावी दलाई लामा के पुनर्जन्म की परम्परा की आवश्यकता है या नहीं इस विषय पर श्रद्धालु जनता के निर्णय की आवश्यकता हेतु घोषणा मैंने 1969 में ही कर दी थी। फिर भी, इस तथ्य पर अभी भी यदि स्पष्ट मार्ग निर्देश नहीं हुआ, तो श्रद्धालु जनता में दलाई लामा के भावी पुनर्जन्म के पहचान के लिए बहुत अधिक इच्छा हो सकती है और राजनीतिज्ञों द्वारा राजनीतिक लाभ हेतु पुनर्जन्म के पहचान के लिए गलत उपायों के उपयोग का भय भी साक्ष्य दिखलायी देता है, इसलिए दलाई लामा के भावी पुनर्जन्म के बारे में शंका का कोई आधार न हो तथा गलत परिभाषा का कोई अवसर न हो, इसके लिए अपने शरीर एवं चित्त दोनों के स्वस्थ रहते निश्चयपूर्वक शब्दों सहित स्पष्ट मार्ग निर्देश किया जाना मुझे अत्यन्त आवश्यक प्रतीत हो रहा है। इस निर्देश के सम्पूर्ण तथ्य का सूक्ष्मतया एवं स्पष्टतया बोध कराने वाली सामग्रियों में पुनर्जन्म के पहचान की वास्तविकता तथा इसके आधारभूत सिद्धान्त का सही तरीके से जानना अपरिहार्य है, अतः संक्षेप में कहूँगा।

## पूर्वजन्म एवं परजन्म

पुनर्जन्म अथवा टुल्कू की वस्तुस्थिति को स्वीकार करने हेतु पूर्वापर जन्म के अस्तित्व को अवश्य ही स्वीकार करना होगा। चित्तवान सत्त्व का पूर्वजन्म से यहाँ पैदा होने से तथा इस जन्म के काय-आधार के नष्ट होने के उपरान्त परजन्म में जाने से पूर्वापर जन्म की अविच्छिन्न धारा विद्यमान है—ऐसा चार्वाक को छोड़ समस्त प्राचीन भारतीय धार्मिक परम्पराएं एवं सिद्धान्तवादी मानते हैं। कुछ आधुनिक विचारक अदृश्य मात्र को कारण बनाकर पूर्वापर जन्म के अभाव की बात करती हैं, किन्तु कुछ तटस्थ बुद्धिमान वैज्ञानिकों का मानना है कि न दिखलायी देना मात्र अभाव के निश्चय की कसौटी नहीं है।

अनेक धार्मिक सम्प्रदायों एवं सिद्धान्तवादियों में पूर्वापर जन्म के बारे में समान मान्यता होने पर भी जन्म ग्रहणकर्ता पुरुष, जन्म

ग्रहण—विधि, पूर्वापर जन्म की प्रतिसन्धि का नय आदि की व्यवस्था के बारे में उनमें बहुत अधिक भिन्नता है। यहाँ तक कि परजन्म से पूर्वजन्म न मानने वाले सम्प्रदाय भी हैं।

सामान्यतया बौद्ध जन्म को आदिरहित मानते हैं तथा कर्म—क्लेश का ग्रहण कर संसार से मुक्त हो निर्वाण की प्राप्ति होने पर कर्म—क्लेशवश पुनर्जन्म न होना मानते हैं, अतः प्रायःसमस्त बौद्ध कर्म—क्लेश से युक्त अन्तिम जन्म का होना मानते हैं, किन्तु चित्त—सन्तति का विच्छेद नहीं मानते हैं।

पूर्वापर जन्म को न मानने पर यह बौद्धों की चित के दमन होने अथवा न होने पर आधारित वस्तु, मार्ग एवं फल तीनों की समस्त व्यवस्था के विरुद्ध हो जायेगी। युक्ति द्वारा परीक्षण किये जाने पर भी सम्पूर्ण सत्त्वलोक एवं भाजनलोक का उत्पाद अहेतु एवं अप्रत्यय से स्वीकार करना पड़ेगा। इसलिए एक बौद्ध होने के नाते पूर्वापर जन्म को स्वीकार करना ही पड़ेगा।

पूर्वजन्म का स्मरण होने वाले व्यक्तियों के लिए पूर्वापर जन्म परोक्ष विषय नहीं है। अधिकांश साधारण जन मृत्युभव, अन्तराभव, जन्मभव की सन्तति में पूर्व के समस्त स्थानों को भूल जाते हैं, अतः उनके लिए पूर्वापर जन्म की सिद्धि वस्तुबल—युक्ति द्वारा किया जाना आवश्यक होने के कारण यह किञ्चित् परोक्ष विषय है। बुद्धवचनों एवं शास्त्रों में पूर्वापर जन्म की सिद्धि की अनेक युक्तियाँ उक्त हैं, जिन्हें हम सजातीय—पूर्वगामी, उपादन—पूर्वगामी, अभ्यास—पूर्वगामी, अनुभाव—पूर्वगामी सहित युक्तियों में संगृहीत कर सकते हैं। इनका अन्तिम आभिप्रायिक अर्थ यह है कि यदि एक प्रकाशवान एवं विद्यावान चित्त का उपादान कारण एक प्रकाशवान एवं विद्यावान चित्त न हो, तो एक जडधर्म उस प्रकाशवान तथा विद्यावान चित्त का उपादान कारण नहीं हो सकता है। यह मर्म इसी तथ्य पर आधारित है। यह अति स्पष्ट वस्तुस्थिति भी है, क्योंकि इसका अनुमान लगाया जा सकता है कि युक्तिमार्ग द्वारा

बुद्धि से परीक्षण अथवा द्रव्य-प्रयोग से परीक्षण किसी भी माध्यम से प्रकाशवान एवं विद्यावान चित्त की एक नवीन सन्तति अहेतु तथा प्रतिकूल हेतु से सिद्ध नहीं होती है और सूक्ष्म प्रकाशवान तथा विद्यावान चित्त के विच्छिन्न होने का हेतु-प्रत्यय भी नहीं होता है।

आधुनिक मनोविज्ञान, भौतिकविज्ञान तथा स्नायुविज्ञान कोई भी अहेतु अथवा जडद्रव्य द्वारा प्रकाशवान एवं विद्यावान चित्त के निर्माण के उपाय को साक्षात् देखने और परीक्षण करने में सक्षम नहीं हो सके हैं। विशेषकर, अनेक पूर्वजन्मों अथवा मरणानन्तर तुरन्त पूर्वजन्म का स्मरण कर उसका स्थान, शरीर, सम्पत्ति तथा सगे-सम्बन्धियों आदि की प्रामाणिक पहचान करने में समर्थ व्यक्ति केवल प्राचीनकाल में ही नहीं, अपितु वर्तमान समय में भी पूरब व पश्चिम के देशों में बहुत अडिक् हुए हैं तथा हो रहे हैं। उनके अनुभवों की स्मृति को नकारना एक तटस्थ एवं सत्य आचरण नहीं है, अपितु यह प्रत्यक्ष की अनदेखी करना है। तिब्बती परम्परानुसार पुनर्जन्म के पहचान की प्रणाली भी पूर्वस्थानों की स्मृति के अनुभवों पर आधारित एक प्रामाणिक परीक्षण है।

## जन्म ग्रहण-विधि

चित्त अविच्छिन्न रूप में इस जन्म के शरीर का त्याग कर परजन्म के काय-आधार में प्रतिसन्धि ग्रहण करता है। इस प्रकार जन्म ग्रहण भी द्विविध है-कर्म-क्लेशवश जन्म ग्रहण करना तथा करुणा एवं प्रणिधानवश जन्म ग्रहण करना। 1. अविद्यावश पाप-पुण्य कर्मों के संचय करने वालों की वासना चित्त पर स्थापित होती है तथा मृत्युकाल में तृष्णा, उपादान एवं भव द्वारा जो बीजारोपण किया जाता है, उससे परवर्ती जन्म का आक्षेप होता है और उसी से सुगति एवं दुर्गति किसी में भी विवश होकर जन्म ग्रहण किया जाता है। साधारण जन रहट यन्त्र की भाँति विवश होकर जन्म-मृत्यु के अन्तरालरहित चक्र में भ्रमण करते रहते हैं। ऐसी अवस्था में भी सदैव पुण्य के प्रति प्रयत्न, छन्द तथा अभ्यासवश मृत्यु के समय पुण्यकर्म के लिए बीज

बोकर सुगति में जन्म ग्रहण का उपाय साधारण जनों द्वारा भी सम्पादित होता है। 2. आर्यमार्ग प्राप्त बोधिसत्त्व कर्म-क्लेशवश पुनः जन्म ग्रहण नहीं करते हैं, फिर भी जगत का आलम्बन कर करुणावश परहित सम्पादनार्थ प्रणिधान के आधार पर देश, काल, माता-पिता आदि की स्वेच्छ से चयन करते हैं, क्योंकि केवल परकल्याण के लिए जन्म ग्रहण करने वाले वे लोग तो करुणा तथा प्रणिधान के वश जन्म ग्रहण करते हैं।

### निर्माणकाय का लक्षणार्थ

तिब्बती परम्परा में जिन लोगों का पुनर्जन्म के रूप में पहचान किया गया, वे "टुल्कू" के नाम से व्यवहार में प्रचलित हो गये, जो श्रद्धालुओं के सम्मानित शब्द के रूप में रुढ़ हो गया प्रतीत होता है। सामान्यतया टुल्कू यह नाम पारमितायान के शास्त्रों में उल्लिखित बुद्ध के तीन व चार कार्यों के पर्यायों के प्रसंग में एक विशेष काय का नाम है। समस्त आसक्तियों से युक्त एक व्यक्ति महायान मार्ग में प्रविष्ट होकर पुण्य एवं ज्ञान सम्भार के आश्रय से चित्त के आगन्तुक मलों अर्थात् क्लेश एवं ज्ञेय आवरणों का वासना सहित प्रहाण कर मलरहित चित्त द्वारा जब सभी धर्मों को समक्षात् देखता है, उसे ज्ञानधर्मकाय कहा जाता है। इस प्रकार के चित्त की धर्मता को स्वभावकाय कहा जाता है। यह निष्ठागत स्वार्थसम्पद् काय अथवा धर्मकाय है। किन्तु वह बुद्धों में परस्पर आपस में प्रतीत होता है, न कि अन्य में। अतः परार्थ सम्पादन के लिए दूसरों को प्रतीत होने वाला रूपकाय अपरिहार्य है। इसीलिए उच्च स्तरीय बोधसत्त्वों की दिखलायी देने वाला तथा अकनिष्ठ देवलोक में स्थित आदि पाँच विनियतों से युक्त निष्ठागत रूपकाय को सम्भोगकाय कहा जाता है तथा उसके द्वारा निर्मित साधारण जनों में भी प्रतीयमान देव एवं मनुष्य आदि किसी भी आधार में निर्माण व परिवर्तन करना निर्माणकाय कहा जाता है। इन दोनों कार्यों को परार्थसम्पद् रूपकाय द्वारा व्यवहृत किया जाता है।



निर्माणकाय भी महापुरुषों के लक्षण एवं व्यञ्जनों से आभूषित होता है। क्षेत्र एवं काल—विशेष में अभ्युत्पत्ति आदि बारह कृत्यों को प्रदर्शित करने वाला उत्तम—निर्माणकाय हमारे शास्ता शाक्यराज सदृश है। शिल्प—स्थान द्वारा लोककल्याण करने वाला शैल्पिक—निर्माणकाय है। देव, मनुष्य, तिर्यग्, जल, सेतु, औषधि एवं वृक्ष आदि किसी भी प्रकार के निर्माण द्वारा लोककल्याण करने वाला जन्म—निर्माणकाय है। तिब्बत में पुनर्जन्म के रूप में पहचाने गये महापुरुषों को जिस निर्माणकाय के द्वारा व्यवहृत किया गया है, उसे इन तीन कार्यों में से जन्म—निर्माणकाय के अन्तर्गत संगृहीत करना पड़ेगा। बुद्ध के प्रामाणिक जन्म—निर्माणकाय वाले अनेक लामा एवं टुल्कू निश्चित रूप से हो सकते हैं, जो सर्वत्र व्याप्त नहीं हो सकते हैं, किन्तु तिब्बत के निर्माणकाय समूह में शैक्ष—आर्य, सम्भार—प्रयोगमार्गीय पृथग्जन तथा मार्ग में अप्रविष्ट किसी भी प्रकार के (निर्माणकाय के) बारे में तो कहना ही क्या है? उनमें सदृशता एवं सम्बन्ध के कारण टुल्कू नाम प्रज्ञप्त किया गया प्रतीत होता है। जमयङ् ख्येनचे वडपो का मानना है कि “पूर्व काय—व्यूह को समेटकर परवर्ती (काय) को ग्रहण करना जन्म है तथा निर्माण (काय) के आधार को बिना समेटे अपर निर्माण (काय) का प्रदर्शन करना निर्माण (काय) है।”

## पुनर्जन्म की पहचान

किसी विशेष व्यक्ति के पूर्वजन्म को पहचान कर यह किसका पुनर्जन्म है? इसे स्पष्टतया प्रदर्शित करने वाली विधियाँ बुद्ध के जीवनकाल में भी अस्तित्व में थी। तथागत द्वारा कर्मफल की व्यवस्था की देशना के अवसर पर किस जन्म में किस कर्म के संचय द्वारा वर्तमान में इस प्रकार के फल का अनुभव हो रहा है, इनकी विस्तारपूर्वक देशना चतुर्वर्ग विनयागम, जातकों, दम्मूक सूत्र, कर्मशतक आदि अधिकांश सूत्र एवं तन्त्रों में अपरिमित रूप में उपलब्ध हैं। बुद्ध के परिनिर्वाण के अनन्तर भारतीय पण्डितों की जीवनियों में भी ऐसा बहुत कुछ देखने को मिलता है कि कौन पूर्वजन्म में किस रूप में पैदा हुआ

था। फिर भी, तिब्बती परम्परा के अनुसार पुनर्जन्म के पहचान तथा उनकी गणना की परम्परा नहीं रही।

## तिब्बत में पुनर्जन्म के पहचान की पद्धति

तिब्बत में बौद्धधर्म के प्रसार के पूर्व बोन सम्प्रदाय में भी पूर्वापर जन्म की सत्ता मान्य थी। बौद्धधर्म के प्रसार के पश्चात् समस्त शिक्षित तिब्बतियों ने पूर्वापर जन्म की सत्ता पर विश्वास किया और अनेक शासनधर महापुरुषों के पूर्वजन्म तथा उनके द्वारा कृत कल्याणकारी कार्यों के उपर परीक्षण एवं श्रद्धा, इच्छा एवं प्रार्थना करने वाले संस्कार व्यापक रूप से प्रचलन में आये। मणि—कबुम, पञ्चवर्गीय क—थङ् आदि अति आरम्भिक तिब्बती शास्त्र तथा ग्याहरवीं शताब्दी में आचार्य दीपंकर के तिब्बत प्रवास के दौरान रचित बोधिसत्त्वमण्पावलि, क—दम पुत्रधर्म आदि आर्य अवलोकितेश्वर की जातकमाला को प्रदर्शित करने वाले अनेक प्रामाणिक शास्त्र हुए। फिर भी, सम्प्रति विशेषरूप से इस पुनर्जन्म के पहचान की परम्परा का प्रारम्भ सर्वप्रथम तेरहवीं शताब्दी के पूर्वाद्ध में कर्मापक्षी के शिष्यों द्वारा उन्हें त्रिकालज्ञाता कर्मापा के भविष्यवाणी के अनुकूल होने पर उनके पुनर्जन्म के रूप में पहचान किये जाने तथा उनके प्रति श्रद्धा एवं विश्वास किये जाने के कारण हुआ, ऐसा प्रसिद्ध है। तबसे लेकर आज तक आठ सौ से भी अधिक वर्षों में सत्रह कर्मापा का आभिर्भाव हो चुका है। पन्द्रहवीं शताब्दी में कुनगा सडमो की पहचान डाकिनी छोस् क्यि डोनमे के पुनर्जन्म के रूप में हुई और तबसे आज तक समदिङ् दोर्जे फगामो का दस से भी अधिक पुनर्जन्म हो चुका है। तिब्बत में पुनर्जन्म के रूप में पहचान किये गये टुल्कू के रूप में प्रव्रजित, तान्त्रिक, स्त्री एवं पुरुष अर्थात् सभी वर्ग के लोग हुए हैं। यह प्रणाली धीरे—धीरे तिब्बती बौद्धधर्म की दूसरी परम्पराओं में भी फैल गयी और इस प्रकार हम सभी जानते हैं कि साक्य, गेलुग, कग्युद, न्यिंगमा, बोदोङ् एवं बोन सहित सभी परम्पराओं में पुनर्जन्म के रूप में पहचान किये गये लामा एवं टुल्कू

(पुनर्जन्म) लोगों ने शासन की सेवा की, किन्तु कुछ ऐसे भी हुए, जिन्होंने शासन को बदनाम किया।

भट्टारक चोंखापा के साक्षात् शिष्य सर्वज्ञ गेदुन डुब ने तिब्बत के चङ् प्रान्त में टाशी ल्हुनपो महाविहार की स्थापना की ओर शिष्य—मण्डली का परिपालन करते हुए उन्होंने सन् 1474 में 84 वर्ष की अवस्था में परिनिर्वाण प्राप्त किया। प्रारम्भ में उनके पुनर्जन्म की पहचान के लिए किसी ने कोई प्रयास नहीं किया, किन्तु वर्ष 1476 में चङ् के तनग नामक स्थान में पैदा हुए एक बालक सङ्ग्ये छोफेल द्वारा अपने पूर्वजन्म के स्मरणों का आश्चर्यजनक तरीके से सटीक वर्णन किया गया, तो उसे गेदुन डुब के पुनर्जन्म के रूप में स्वीकार करना ही पड़ा। तबसे लेकर आजतक दलाई लामा के पुनर्जन्म की तलाश एवं पहचान गादेन फोडङ् संस्था एवं गादेन फोडङ् सरकार द्वारा किये जाने की परम्परा प्रचलित है।

## पुनर्जन्म के पहचान का उपाय

तिब्बत में पुनर्जन्म की प्रथा प्रचलित होने के उपरान्त उसके उपाय भी क्रमशः विकसित हुए, जिनमें प्रमुख रूप से पूर्वजन्म के मृत्युकाल की अन्तिम इच्छा, मार्ग—निर्देश अथवा संकेत—निर्देश, पुनर्जन्म ग्राही बालक द्वारा बाल्यकाल में ही पूर्वजन्म की बातों का प्रामाणिक कथन, पूर्वजन्म के वस्तुओं एवं सम्बन्धियों की पहचान करना है। इसके अतिरिक्त प्रामाणिक महापुरुषों की भविष्यवाणी जानना, लौकिक रक्षकदेवों को शरीर में प्रविष्ट कराकर भाविष्यवाणी करवाना तथा ल्हामो ल—छो (देवी—प्राण सरोवर) आदि रक्षक देवियों के सरोवर में प्रकट प्रतीकों को देखना सहित अत्यधिक उपाय हुए हैं। एक से अधिक योग्य टुल्कू (पुनर्जन्म) होने तथा सही निर्णय लेने में कठिनाई होने पर ऐसी भी प्रथा रही है कि नाम की पर्ची बनाकर उन्हें शेनरिल (सत्तू के छोटे—छोटे गोले) में रखकर बुद्ध एवं बोधिसत्वों के आधार के समक्ष कलश से निकाल कर निर्णय लिया जाता है।

## अमृत (व्यक्ति) का टुल्कू (निर्माणकाय)

सामान्य तौर पर किसी व्यक्ति का मृत्यु के उपरान्त पुनः मनुष्य योनि में उत्पन्न होना पुनर्जन्म कहा जाना चाहिए। इसलिए किसी साधारण व्यक्ति का मृत्यु के पूर्व पुनर्जन्म सम्भव नहीं है, किन्तु एक काल में सैकड़ों, हजारों की संख्या में काय निर्माण में सक्षम उच्च कोटि के बोधिसत्त्वों में इस प्रकार का मृत्युपूर्व निर्माणकाय निश्चित रूप से सम्भव है। फिर भी, तिब्बती पुनर्जन्म के पहचान की कई परम्पराएं हैं, जैसे—एक सन्तानान्तर्गत निर्माणकाय, कर्म—प्रणिधान से सम्बद्ध निर्माणकाय तथा आज्ञापित अथवा अधिष्ठित निर्माणकाय आदि। टुल्कू (पुनर्जन्म) ग्रहण करने का मुख्य उद्देश्य पूर्वजन्म के अधूरे छोटे शासन एवं सत्त्वों के कल्याणकारी कृत्यों को सम्पन्न करना है।

यदि लामा साधारण जन है, तो एक सन्तानान्तर्गत पुनर्जन्म के बदले स्वयं के कर्म—प्रणिधान से सम्बद्ध किसी दूसरे व्यक्ति की निर्माणकाय के रूप में पहचान की जाती है, अथवा अपने पुत्र, शिष्य अथवा किसी दूसरे व्यक्ति का भी धर्मपरम्परा के आदेशानुसार निर्माणकाय के रूप में पहचान किया जाना भी सम्भव है। इस कारण साधारण जनों में भी एक सन्तानान्तर्गत के भीतर न होने वाला मृत्युपूर्व निर्माणकाय हो सकता है। पुनः उच्चकोटि के एक लामा का कायिक निर्माणकाय, वाचिक निर्माणकाय, चित्तज निर्माणकाय आदि अनेक पुनर्जन्म एककाल में हो सकते हैं। हाल की पीढ़ी में सर्वविदित है कि दु—जोम जिगडल येशे दोर्जे तथा चो—ग्यद् द्रिछेन डगवङ् ख्येनरब आदि अनेक लामाओं के मृत्युपूर्व निर्माणकाय हुए हैं।

## स्वर्ण कलश—मन्थन द्वारा निर्धारण

विपत्ति बहुल इस कलियुग में पुनर्जन्म के रूप में पहचान होने वाले लामाओं की संख्या में बढ़ोतरी हुई है, जिनमें से कुछ राजनीति से प्रेरित हैं। अनुचित पद्धति एवं छल—कपट से नकली पुनर्जन्म के पहचान की संख्या दिन—प्रतिदिन बढ़ती जा रही है, जिससे बौद्धशासन की बहुत

अधिक हानि हो रही है। वर्ष 1791 से 1793 तक तिब्बत एवं गोरखा के बीच युद्ध के दौरान तिब्बत को मंचू (चीन) सरकार से मदद माँगनी पड़ी। फलस्वरूप, गोरखा सैनिकों को तिब्बत से खेदेड़ा जा सका और मंचू के अधिकारियों ने तिब्बत के प्रशासन को प्रभावशाली बनाने का बहाना बनाकर एक 29 सूत्रीय प्रस्ताव रखा, जिसमें दलाई लामा, पनचेन लामा तथा हो-थोगथु के पुनर्जन्म को तलाशने के लिए स्वर्ण कलश-मन्थन प्रक्रिया द्वारा निर्धारण करने का सुझाव दिया गया। इसी की वजह से दलाई लामा तथा पनचेन लामा के कुछ एक पुनर्जन्म तथा कुछ अन्य उच्चकोटि के लामाओं के पुनर्जन्म का निर्धारण न केवल स्वर्ण कलश-मन्थन की प्रक्रिया द्वारा किया गया, अपितु आठवें दलाई लामा जमपल ग्यात्सो ने इस स्वर्ण कलश मन्थन की विधि-विधान की रचना भी कर दी।

इस प्रकार की परम्परा के बावजूद बाद में नवें दलाई लामा, तेरहवें दलाई लामा तथा स्वयं चौदहवें दलाई लामा मेरे लिए स्वर्ण कलश-मन्थन प्रक्रिया नहीं अपनायी गयी। दसवें दलाई लामा के भी पुनर्जन्म की पहचान पूर्व से ही निश्चित हो जाने के कारण वास्तव में स्वर्ण कलश-मन्थन नहीं किया गया, किन्तु मंचू शासकों को सन्तुष्ट करने हेतु उसकी घोषणा मात्र कर दी गयी। सही मायने में स्वर्ण कलश-मन्थन द्वारा पुनर्जन्म का निर्धारण केवल ग्यारहवें एवं बारहवें दलाई लामा का ही हुआ। उसमें भी बारहवें दलाई लामा का पुनर्जन्म भी स्वर्ण कलश-मन्थन से पूर्व ही निर्धारित हो चुका था, अतः वास्तव में स्वर्ण कलश-मन्थन द्वारा निर्धारण मात्र एक ही दलाई लामा का हुआ है। इसी प्रकार पनचेन लामा के पुनर्जन्मों की श्रृङ्खला में भी केवल आठवें तथा नवें पनचेन लामा के पुनर्जन्म के निर्धारण हेतु स्वर्ण कलश-मन्थन की प्रक्रिया अपनायी गयी। यह प्रक्रिया मंचू शासकों द्वारा बलपूर्वक थौपी गयी मात्र थी, क्योंकि न तो तिब्बतियों को इस पर विश्वास था और न ही यह परम्परागत धार्मिक उपाय था। यदि इस विधि का ईमानदारी

से प्रयोग में लाया गया होता, तो शायद इसे शेनरिल (सत्तू की गोली) वाले उपाय के सदृश माना जा सकता था।

वर्ष 1880 में तेरहवें दलाई लामा के पुनर्जन्म के पहचान के समय भी तिब्बत एवं मंचू के बीच पुरोहित-यजमान का सम्बन्ध नहीं टूटा था और मंचू का प्रभाव कुछ हद तक बरकरार था। इसके बावजूद आठवें पनचेन लामा, नेछुङ् सम-ये धर्मपालक की भविष्यवाणी तथा ल्हामो ल-छो में प्रकट प्रतीकों सहित सभी प्रकार से एक निर्विवाद पुनर्जन्म का निर्धारण किया गया, जिसके कारण स्वर्ण कलश-मन्थन की प्रक्रिया की आवश्यकता नहीं हुई। इस बात का खुलासा स्वयं तेरहवें दलाई लामा ने जल-कपि वर्ष (1933) में अपने अन्तिम वचन के रूप में इस प्रकार किया है— “मेरे पुनर्जन्म का निर्धारण पूर्व में प्रचलित स्वर्ण कलश-मन्थन की प्रक्रिया से नहीं हुआ है, बल्कि भविष्यवाणी एवं स्पष्ट संकेतों के आधार पर परीक्षण द्वारा भव-शम के उत्तम नायक दलाई लामा के पुनर्जन्म के रूप में पहचान कर मुझे राजसिंहासन पर बैठाया गया है।”

वर्ष 1939 में चौदहवें दलाई लामा अर्थात् स्वयं मेरे पुनर्जन्म की पहचान के समय तिब्बत एवं चीन के बीच पुरोहित-यजमान का सम्बन्ध विच्छेद हो चुका था। इसलिए स्वर्ण कलश-मन्थन प्रक्रिया की आवश्यकता का कोई प्रसंग ही नहीं था। यह सर्वविदित है कि रक्षकदेव, उच्च लामाओं की भविष्यवाणी तथा ल्हामो ल-छो में उभरे स्पष्ट प्रतीकों आदि में समानता के कारण पुनर्जन्म की पहचान का निर्धारण तिब्बत के रीजेन्ट तथा तिब्बती राष्ट्रीय एसेम्बली ने ही किया और चीन ने कोई आपत्ति नहीं की। फिर भी, बाद में चीनी साम्यवाद से सम्बद्ध कुछ अधिकारियों ने विचारकर अपनी प्रभुता जाहिर करने हेतु चतुराईपूर्वक चीन के समाचारपत्रों में ऐसी झूठी खबरें प्रकाशित कर दी कि—“पुनर्जन्म के पहचान के लिए स्वर्ण कलश-मन्थन प्रक्रिया की आवश्यकता न होने की सहमति प्रदान की गयी है तथा मेरे राज्याभिषेक

समारोह की अध्यक्षता उहुटुड शिङ् ने की"। ये बातें सरासर झूठी थीं, जिनका खुलासा चीनी जनवादी गणराज्य के प्रगतिशील माने जाने वाले व्यक्ति तथा नेशनल पीपुल्स कांग्रेस के उपाध्यक्ष ड-बो डवड् जिगमेद ने 31 जुलाई, 1989 को तिब्बती स्वायत्तता के पाँचवीं जनप्रतिनिधिसभा के द्वितीय अधिवेशन के दौरान दस्तावेजों के साक्ष्य एवं पूर्ण विवरण सहित किया और अपने भाषण के अन्त में उन्होंने कहा कि "गोड मिड तड (चीन की पुरानी राष्ट्रीय पार्टी) ने झूठ कहा है, किन्तु गुडठेन तड (चीनी साम्यवाद) हमें उनके पीछे भागते हुए लगातार झूठ बोलने की क्या आवश्यकता है?" उक्त कथन से हम इस झूठ का अनुमान सरलता से लगा सकते हैं।

## साजिशकर्ता की निराशा

हाल के वर्षों में समृद्ध लामाओं की संस्था के कुछ गैर जिम्मेदार कोषाध्यक्षों ने राग-द्वेष से उन्मत्त होकर अधार्मिक तरीके से पुनर्जन्म की पहचान करायी है, जिससे बुद्धशासन एवं बौद्धसंघ सहित समाज को काफी क्षति हुई है। मंचू साम्राज्य से लेकर चीनी राजनीतिक नेतृत्व ने क्रमशः तिब्बत एवं मंगोलिया के मामलों में दखल देने के लिए लामाओं तथा टुल्कू लोगों को राजनीतिक हथियार बनाकर उनके साथ धोखा एवं छल-कपट किया है। आज जबकि चीनी जनवादी गणराज्य की एकधिकारवादी सरकार भी कम्युनिस्ट होने के कारण धर्म को नहीं मानती है, किन्तु धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप करते हुए "राष्ट्रप्रेम धर्मप्रेम" के नाम से पुनर्शिक्षा का सख्त अभियान चला रही है। 1 सितम्बर, 2007 से आदेश नम्बर पाँच लागू किया गया, जिसके अन्तर्गत तिब्बत में लामा एवं टुल्कू लोगों के पुनर्जन्म के पहचान पर चीनी सरकार के नियन्त्रण की बात कही गयी है, जो एक लज्जारहित असभ्य आचरण है और हास्यास्पद भी है। तिब्बतियों की इन असाध्य ारण सांस्कृतिक परम्पराओं को नष्ट करने के लिए षडयन्त्र के तहत लामा एवं टुल्कू के पुनर्जन्म के पहचान के लिए विभिन्न प्रकार के

अनुचित उपायों को अपनाकर चीन सरकार ने समस्त तिब्बती जनता के हृदय में कभी न भर पाने वाला घाव दिया है और दे रहा है।

इतना ही नहीं, वे मेरे मरने का इन्तजार कर रहे हैं ताकि पन्द्रहवें दलाई लामा के पुनर्जन्म की पहचान अपनी इच्छानुसार कर सकें। हाल ही में बने नियम कानून तथा क्रमिक घोषणाओं से यह स्पष्ट होता है कि वह तिब्बती तथा तिब्बती बौद्ध परम्परा को मानने वाले सहित अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय को धोखा देने की व्यापक एवं गम्भीर षडयन्त्र रच रहा है। इस कारण एवं स्थायी कल्याण के लिए इस प्रकार के साजिश को निष्फल करने हेतु पूर्व से ही इसका निराकरण कर दूँ। एतदर्थ मैं घोषणा करता हूँ—

## वर्तमान दलाई लामा का पुनर्जन्म

जैसे मैंने पूर्व में कहा कि पुनर्जन्म लेना पूर्वजन्म के व्यक्ति की अपनी इच्छा पर निर्भर है अथवा कम से कम उसके कर्म, पुण्य तथा प्रणिधान के वश से होता है। कहाँ कैसे जन्म लेना है, किन विधियों से पहचान की जानी है, इसका पूर्ण अधिकार पुनर्जन्म लेने वाले व्यक्ति को होता है। यह सच है कि कोई दूसरा व्यक्ति अपनी इच्छानुसार, बलपूर्वक या दबाव डालकर कुछ नहीं कर सकता है। विशेषकर चीनी राजनीतिक अधिकारियों, जो लामा—टुल्कू की व्यवस्था को तो छोड़ दीजिये, पूर्वजन्म एवं परजन्म भी नहीं मानते हैं, उनके द्वारा लामाओं के पुनर्जन्म तथा विशेषकर दलाई लामा एवं पनचेन लामा के पुनर्जन्म के पहचान के लिए केवल अधिकार के बल पर हस्तक्षेप किया जाना अनुचित है। यह स्पष्टतया सिद्ध हो गया है कि वे अपने राजनीतिक सिद्धान्त के विरुद्ध पुनर्जन्म की पहचान के लिए निर्लज्ज होकर मिथ्या आचरण एवं छल—कपट कर रहे हैं।

ऐसी स्थिति उत्पन्न होने पर तिब्बती जनता एवं तिब्बती बौद्धधर्म के अनुयायियों वाला विश्व समाज उसे न कदापि स्वीकार करेगा और न ही, उसका समर्थन करेगा। जब मैं स्वयं भट्टारक गोदुन डुब की आयु



के समकक्ष नब्बे वर्ष का हो जाऊँगा, तब तिब्बती बौद्ध परम्परा के उच्च लामाओं सहित तिब्बती जनता तथा सम्बद्ध श्रद्धालुजनों के साथ विचार-विमर्श द्वारा दलाई लामा के भावी पुनर्जन्म की आवश्यकता के पक्ष एवं विपक्ष में पुनर्विचार एवं निर्णय कराने की मेरी योजना है।

यदि दलाई लामा के भावी पुनर्जन्म को कायम रखने और पन्द्रहवें दलाई लामा के पुनर्जन्म को तलाशने की आवश्यकता पड़ी, तो ऐसी स्थिति में इसका पूर्ण दायित्व दलाई लामा के गादेन फोडङ् संस्था के विश्वसनीय अधिकारियों का होगा। उन्हें पूर्व की परम्परा का अनुसरण करते हुए तिब्बती बौद्ध परम्परा के प्रमुख मठाधीशों तथा दलाई लामाओं की संगति में शरीर एवं उसकी छाया की भाँति रहने वाले धर्मपालकों के अनुसार उनसे मार्गदर्शन ग्रहण कर भावी दलाई लामा के पुनर्जन्म का खोज एवं निर्धारण करना होगा। स्वयं मैं भी इसके लिए स्पष्ट मार्ग-निर्देश लिखित रूप में रखकर जाऊँगा।

मैं अन्ततः आप सभी को ध्यान दिलाना चाहता हूँ कि इस प्रकार के विधिवत् खोज द्वारा पुनर्जन्म के पहचान के अतिरिक्त राजनीतिक उद्देश्य से चीनी जनवादी गणराज्य के राजनीतिक अधिकारियों सहित किसी भी प्रकार के राजनीतिक स्तर से यदि कोई मेरे पुनर्जन्म के पहचान करता है, तो उसे किसी भी स्थिति में दलाई लामा के निर्माणकाय (पुनर्जन्म) के रूप में स्वीकार नहीं किया जाना चाहिए और श्रद्धा भी नहीं की जानी चाहिए।

दलाई लामा

धर्मशाला

**Statement of  
His Holiness the Fourteenth Dalai Lama,  
Tenzin Gyatso,**

**on the Issue of His Reincarnation**

The Dalai Lama  
Dharamsala



## Introduction

My fellow Tibetans, both in and outside Tibet, all those who follow the Tibetan Buddhist tradition, and everyone who has a connection to Tibet and Tibetans: due to the foresight of our ancient kings, ministers and scholar-adepts, the complete teaching of the Buddha, comprising the scriptural and experiential teachings of the Three Vehicles and the Four Sets of Tantra and their related subjects and disciplines flourished widely in the Land of Snow. Tibet has served as a source of Buddhist and related cultural traditions for the world. In particular, it has contributed significantly to the happiness of countless beings in Asia, including those in China, Tibet and Mongolia.

In the course of upholding the Buddhist tradition in Tibet, we evolved a unique Tibetan tradition of recognizing the reincarnations of scholar-adepts that has been of immense help to both the Dharma and sentient beings, particularly to the monastic community.

Since the omniscient Gedun Gyatso was recognized and confirmed as the reincarnation of Gedun Drub in the fifteenth century and the Gaden Phodrang Labrang (the Dalai Lama's institution) was established, successive reincarnations have been recognized. The third in the line, Sonam Gyatso, was given the title of the Dalai Lama. The Fifth Dalai Lama, Ngawang Lobsang Gyatso, established the Gaden Phodrang Government in 1642, becoming the spiritual and political head of Tibet. For more than 600 years since Gedun Drub, a series of unmistakable reincarnations has been recognised in the lineage of the Dalai Lama.

The Dalai Lamas have functioned as both the political and spiritual leaders of Tibet for 369 years since 1642. I have now voluntarily brought this to an end, proud and satisfied that we can pursue the kind of democratic system of government flourishing elsewhere in the world. In fact, as far back as 1969, I made clear that concerned people should decide whether the Dalai Lama's reincarnations should continue in the

future. However, in the absence of clear guidelines, should the concerned public express a strong wish for the Dalai Lamas to continue, there is an obvious risk of vested political interests misusing the reincarnation system to fulfil their own political agenda. Therefore, while I remain physically and mentally fit, it seems important to me that we draw up clear guidelines to recognise the next Dalai Lama, so that there is no room for doubt or deception. For these guidelines to be fully comprehensible, it is essential to understand the system of Tulku recognition and the basic concepts behind it. Therefore, I shall briefly explain them below.

### Past and future lives

In order to accept reincarnation or the reality of Tulkus, we need to accept the existence of past and future lives. Sentient beings come to this present life from their previous lives and take rebirth again after death. This kind of continuous rebirth is accepted by all the ancient Indian spiritual traditions and schools of philosophy, except the Charvakas, who were a materialist movement. Some modern thinkers deny past and future lives on the premise that we cannot see them. Others do not draw such clear cut conclusions on this basis.

Although many religious traditions accept rebirth, they differ in their views of what it is that is reborn, how it is reborn, and how it passes through the transitional period between two lives. Some religious traditions accept the prospect of future life, but reject the idea of past lives.

Generally, Buddhists believe that there is no beginning to birth and that once we achieve liberation from the cycle of existence by overcoming our karma and destructive emotions, we will not be reborn under the sway of these conditions. Therefore, Buddhists believe that there is an end to being reborn as a result of karma and destructive emotions, but most Buddhist philosophical schools do not accept that the mind-stream comes to an end. To reject past and future rebirth would contradict the

Buddhist concept of the ground, path and result, which must be explained on the basis of the disciplined or undisciplined mind. If we accept this argument, logically, we would also have to accept that the world and its inhabitants come about without causes and conditions. Therefore, as long as you are a Buddhist, it is necessary to accept past and future rebirth.

For those who remember their past lives, rebirth is a clear experience. However, most ordinary beings forget their past lives as they go through the process of death, intermediate state and rebirth. As past and future rebirths are slightly obscure to them, we need to use evidence-based logic to prove past and future rebirths to them.

There are many different logical arguments given in the words of the Buddha and subsequent commentaries to prove the existence of past and future lives. In brief, they come down to four points: the logic that things are preceded by things of a similar type, the logic that things are preceded by a substantial cause, the logic that the mind has gained familiarity with things in the past, and the logic of having gained experience of things in the past.

Ultimately all these arguments are based on the idea that the nature of the mind, its clarity and awareness, must have clarity and awareness as its substantial cause. It cannot have any other entity such as an inanimate object as its substantial cause. This is self-evident. Through logical analysis we infer that a new stream of clarity and awareness cannot come about without causes or from unrelated causes. While we observe that mind cannot be produced in a laboratory, we also infer that nothing can eliminate the continuity of subtle clarity and awareness.

As far as I know, no modern psychologist, physicist, or neuroscientist has been able to observe or predict the production of mind either from matter or without cause.

There are people who can remember their immediate past life or even many past lives, as well as being able to recognise places and relatives from those lives. This is not just something that happened in the past. Even today there are many people in the East and West, who can recall incidents and experiences from their past lives. Denying this is not an honest and impartial way of doing research, because it runs counter to this evidence. The Tibetan system of recognising reincarnations is an authentic mode of investigation based on people's recollection of their past lives.

### How rebirth takes place

There are two ways in which someone can take rebirth after death: rebirth under the sway of karma and destructive emotions and rebirth through the power of compassion and prayer. Regarding the first, due to ignorance negative and positive karma are created and their imprints remain on the consciousness. These are reactivated through craving and grasping, propelling us into the next life. We then take rebirth involuntarily in higher or lower realms. This is the way ordinary beings circle incessantly through existence like the turning of a wheel. Even under such circumstances ordinary beings can engage diligently with a positive aspiration in virtuous practices in their day-to-day lives. They familiarise themselves with virtue that at the time of death can be reactivated providing the means for them to take rebirth in a higher realm of existence. On the other hand, superior Bodhisattvas, who have attained the path of seeing, are not reborn through the force of their karma and destructive emotions, but due to the power of their compassion for sentient beings and based on their prayers to benefit others. They are able to choose their place and time of birth as well as their future parents. Such a rebirth, which is solely for the benefit of others, is rebirth through the force of compassion and prayer.

## The meaning of Tulku

It seems the Tibetan custom of applying the epithet 'Tulku' (Buddha's Emanation Body) to recognized reincarnations began when devotees used it as an honorary title, but it has since become a common expression. In general, the term Tulku refers to a particular aspect of the Buddha, one of the three or four described in the Sutra Vehicle. According to this explanation of these aspects of the Buddha, a person who is totally bound by destructive emotions and karma has the potential to achieve the Truth Body (Dharmakaya), comprising the Wisdom Truth Body and Nature Truth Body. The former refers to the enlightened mind of a Buddha, which sees everything directly and precisely, as it is, in an instant. It has been cleared of all destructive emotions, as well as their imprints, through the accumulation of merit and wisdom over a long period of time. The latter, the Nature Truth Body, refers to the empty nature of that all-knowing enlightened mind. These two together are aspects of the Buddhas for themselves. However, as they are not directly accessible to others, but only amongst the Buddhas themselves, it is imperative that the Buddhas manifest in physical forms that are accessible to sentient beings in order to help them. Hence, the ultimate physical aspect of a Buddha is the Body of Complete Enjoyment (Sambhogakaya), which is accessible to superior Bodhisattvas, and has five definite qualifications such as residing in the Akanishta Heaven. And from the Body of Complete Enjoyment are manifested the myriad Emanation Bodies or Tulkus (Nirmanakaya), of the Buddhas, which appear as gods or humans and are accessible even to ordinary beings. These two physical aspects of the Buddha are termed Form Bodies, which are meant for others.

The Emanation Body is three-fold: a) the Supreme Emanation Body like Shakyamuni Buddha, the historical Buddha, who manifested the twelve deeds of a Buddha such as being born in the place he chose and so forth; b) the Artistic Emanation Body which serves others by appearing as craftsmen, artists and so on; and c) the Incarnate Emanation Body,



according to which Buddhas appear in various forms such as human beings, deities, rivers, bridges, medicinal plants, and trees to help sentient beings. Of these three types of Emanation Body, the reincarnations of spiritual masters recognized and known as 'Tulkus' in Tibet come under the third category. Among these Tulkus there may be many who are truly qualified Incarnate Emanation Bodies of the Buddhas, but this does not necessarily apply to all of them. Amongst the Tulkus of Tibet there may be those who are reincarnations of superior Bodhisattvas, Bodhisattvas on the paths of accumulation and preparation, as well as masters who are evidently yet to enter these Bodhisattva paths. Therefore, the title of Tulku is given to reincarnate Lamas either on the grounds of their resembling enlightened beings or through their connection to certain qualities of enlightened beings.

As Jamyang Khyentse Wangpo said:

"Reincarnation is what happens when someone takes rebirth after the predecessor's passing away; emanation is when manifestations take place without the source's passing away."

### Recognition of Reincarnations

The practice of recognizing who is who by identifying someone's previous life occurred even when Shakyamuni Buddha himself was alive. Many accounts are found in the four Agama Sections of the Vinaya Pitaka, the Jataka Stories, the Sutra of the Wise and Foolish, the Sutra of One Hundred Karmas and so on, in which the Tathagata revealed the workings of karma, recounting innumerable stories about how the effects of certain karmas created in a past life are experienced by a person in his or her present life. Also, in the life stories of Indian masters, who lived after the Buddha, many reveal their previous places of birth. There are many such stories, but the system of recognizing and numbering their reincarnations did not occur in India.

## The system of recognizing reincarnations in Tibet

Past and future lives were asserted in the indigenous Tibetan Bon tradition before the arrival of Buddhism. And since the spread of Buddhism in Tibet, virtually all Tibetans have believed in past and future lives. Investigating the reincarnations of many spiritual masters who upheld the Dharma, as well as the custom of praying devotedly to them, flourished everywhere in Tibet. Many authentic scriptures, indigenous Tibetan books such as the Mani Kabum and the Fivefold Kathang Teachings and others like the The Books of Kadam Disciples and the Jewel Garland: Responses to Queries, which were recounted by the glorious, incomparable Indian master Dipankara Atisha in the 11th century in Tibet, tell stories of the reincarnations of Arya Avalokiteshvara, the Bodhisattva of compassion. However, the present tradition of formally recognizing the reincarnations of masters first began in the early 13th century with the recognition of Karmapa Pagshi as the reincarnation of Karmapa Dusum Khyenpa by his disciples in accordance with his prediction. Since then, there have been seventeen Karmapa incarnations over more than nine hundred years. Similarly, since the recognition of Kunga Sangmo as the reincarnation of Khandro Choekyi Dronme in the 15th century there have been more than ten incarnations of Samding Dorje Phagmo. So, among the Tulkus recognized in Tibet there are monastics and lay tantric practitioners, male and female. This system of recognizing the reincarnations gradually spread to other Tibetan Buddhist traditions, and Bon, in Tibet. Today, there are recognized Tulkus in all the Tibetan Buddhist traditions, the Sakya, Geluk, Kagyu and Nyingma, as well as Jonang and Bodong, who serve the Dharma. It is also evident that amongst these Tulkus some are a disgrace.

The omniscient Gedun Drub, who was a direct disciple of Je Tsongkhapa, founded Tashi Lhunpo Monastery in Tsang and took care of his students. He passed away in 1474 at the age of 84. Although

initially no efforts were made to identify his reincarnation, people were obliged to recognize a child named Sangye Chophel, who had been born in Tanak, Tsang (1476), because of what he had to say about his amazing and flawless recollections of his past life. Since then, a tradition began of searching for and recognizing the successive reincarnations of the Dalai Lamas by the Gaden Phodrang Labrang and later the Gaden Phodrang Government.

### The ways of recognizing reincarnations

After the system of recognizing Tulkus came into being, various procedures for going about it began to develop and grow. Among these some of the most important involve the predecessor's predictive letter and other instructions and indications that might occur; the reincarnation's reliably recounting his previous life and speaking about it; identifying possessions belonging to the predecessor and recognizing people who had been close to him. Apart from these, additional methods include asking reliable spiritual masters for their divination as well as seeking the predictions of mundane oracles, who appear through mediums in trance, and observing the visions that manifest in sacred lakes of protectors like Lhamoi Latso, a sacred lake south of Lhasa.

When there happens to be more than one prospective candidate for recognition as a Tulku, and it becomes difficult to decide, there is a practice of making the final decision by divination employing the dough-ball method (*zen tak*) before a sacred image while calling upon the power of truth.

### Emanation before the passing away of the predecessor (*ma-dhey tulku*)

Usually a reincarnation has to be someone's taking rebirth as a human being after previously passing away. Ordinary sentient beings generally cannot manifest an emanation before death (*ma-dhey tulku*), but superior

Bodhisattvas, who can manifest themselves in hundreds or thousands of bodies simultaneously, can manifest an emanation before death. Within the Tibetan system of recognizing Tulkus there are emanations who belong to the same mind-stream as the predecessor, emanations who are connected to others through the power of karma and prayers, and emanations who come as a result of blessings and appointment.

The main purpose of the appearance of a reincarnation is to continue the predecessor's unfinished work to serve Dharma and beings. In the case of a Lama who is an ordinary being, instead of having a reincarnation belonging to the same mind-stream, someone else with connections to that Lama through pure karma and prayers may be recognized as his or her emanation. Alternatively it is possible for the Lama to appoint a successor who is either his disciple or someone young who is to be recognized as his emanation. Since these options are possible in the case of an ordinary being, an emanation before death that is not of the same mind-stream is feasible. In some cases one high Lama may have several reincarnations simultaneously, such as incarnations of body, speech and mind and so on. In recent times, there have been well-known emanations before death such as Dudjom Jigdral Yeshe Dorje and Chogye Trichen Ngawang Khyenrab.

### Using the Golden Urn

As the degenerate age gets worse, and as more reincarnations of high Lamas are being recognized, some of them for political motives, increasing numbers have been recognized through inappropriate and questionable means, as a result of which huge damage has been done to the Dharma.

During the conflict between Tibet and the Gurkhas (1791-93) the Tibetan Government had to call on Manchu military support. Consequently the Gurkha military was expelled from Tibet, but afterwards Manchu officials made a 29-point proposal on the pretext of making the Tibetan Government's administration more efficient. This

proposal included the suggestion of picking lots from a Golden Urn to decide on the recognition of the reincarnations of the Dalai Lamas, Panchen Lamas and Hutuktus, a Mongolian title given to high Lamas. Therefore, this procedure was followed in the case of recognizing some reincarnations of the Dalai Lama, Panchen Lama and other high Lamas. The ritual to be followed was written by the Eighth Dalai Lama Jampel Gyatso. Even after such a system had been introduced, this procedure was dispensed with for the Ninth, Thirteenth and myself, the Fourteenth Dalai Lama.

Even in the case of the Tenth Dalai Lama, the authentic reincarnation had already been found and in reality this procedure was not followed, but in order to humour the Manchus it was merely announced that this procedure had been observed.

The Golden Urn system was actually used only in the cases of the Eleventh and Twelfth Dalai Lamas. However, the Twelfth Dalai Lama had already been recognized before the procedure was employed. Therefore, there has only been one occasion when a Dalai Lama was recognized by using this method. Likewise, among the reincarnations of the Panchen Lama, apart from the Eighth and the Ninth, there have been no instances of this method being employed. This system was imposed by the Manchus, but Tibetans had no faith in it because it lacked any spiritual quality. However, if it were to be used honestly, it seems that we could consider it as similar to the manner of divination employing the dough-ball method (*zen tak*).

In 1880, during the recognition of the Thirteenth Dalai Lama as the reincarnation of the Twelfth, traces of the Priest-Patron relationship between Tibet and the Manchus still existed. He was recognized as the unmistakable reincarnation by the Eighth Panchen Lama, the predictions of the Nechung and Samye oracles and by observing visions that appeared in Lhamoi Latso, therefore the Golden Urn procedure was not followed.

This can be clearly understood from the Thirteenth Dalai Lama's final testament of the Water-Monkey Year (1933) in which he states:

"As you all know, I was selected not in the customary way of picking lots from the golden urn, but my selection was foretold and divined. In accordance with these divinations and prophecies I was recognized as the reincarnation of the Dalai Lama and enthroned."

When I was recognized as the Fourteenth incarnation of the Dalai Lama in 1939, the Priest-Patron relationship between Tibet and China had already come to an end. Therefore, there was no question of any need to confirm the reincarnation by employing the Golden Urn. It is well-known that the then Regent of Tibet and the Tibetan National Assembly had followed the procedure for recognizing the Dalai Lama's reincarnation taking account of the predictions of high Lamas, oracles and the visions seen in Lhamoi Latso; the Chinese had no involvement in it whatever. Nevertheless, some concerned officials of the Guomintang later cunningly spread lies in the newspapers claiming that they had agreed to forego the use of the Golden Urn and that Wu Chung-tsin presided over my enthronement, and so on. This lie was exposed by Ngabo Ngawang Jigme, the Vice-Chairman of the Standing Committee of the National People's Congress, who the People's Republic of China considered to be a most progressive person, at the Second Session of the Fifth People's Congress of the Tibet Autonomous Region (31st July 1989). This is clear, when, at the end of his speech, in which he gave a detailed explanation of events and presented documentary evidence, he demanded:

"What need is there for the Communist Party to follow suit and continue the lies of the Guomintang?"

### **Deceptive strategy and false hopes**

In the recent past, there have been cases of irresponsible managers of wealthy Lama-estates who indulged in improper methods to recognize

reincarnations, which have undermined the Dharma, the monastic community and our society. Moreover, since the Manchu era Chinese political authorities repeatedly engaged in various deceitful means using Buddhism, Buddhist masters and Tulkus as tools to fulfil their political ends as they involved themselves in Tibetan and Mongolian affairs. Today, the authoritarian rulers of the People's Republic of China, who as communists reject religion, but still involve themselves in religious affairs, have imposed a so-called re-education campaign and declared the so-called Order No. Five, concerning the control and recognition of reincarnations, which came into force on 1st September 2007. This is outrageous and disgraceful. The enforcement of various inappropriate methods for recognizing reincarnations to eradicate our unique Tibetan cultural traditions is doing damage that will be difficult to repair.

Moreover, they say they are waiting for my death and will recognize a Fifteenth Dalai Lama of their choice. It is clear from their recent rules and regulations and subsequent declarations that they have a detailed strategy to deceive Tibetans, followers of the Tibetan Buddhist tradition and the world community. Therefore, as I have a responsibility to protect the Dharma and sentient beings and counter such detrimental schemes, I make the following declaration.

### **The next incarnation of the Dalai Lama**

As I mentioned earlier, reincarnation is a phenomenon which should take place either through the voluntary choice of the concerned person or at least on the strength of his or her karma, merit and prayers. Therefore, the person who reincarnates has sole legitimate authority over where and how he or she takes rebirth and how that reincarnation is to be recognized. It is a reality that no one else can force the person concerned, or manipulate him or her. It is particularly inappropriate for Chinese communists, who explicitly reject even the idea of past and future lives, let alone the concept of reincarnate Tulkus, to meddle in

the system of reincarnation and especially the reincarnations of the Dalai Lamas and Panchen Lamas. Such brazen meddling contradicts their own political ideology and reveals their double standards. Should this situation continue in the future, it will be impossible for Tibetans and those who follow the Tibetan Buddhist tradition to acknowledge or accept it.

When I am about ninety I will consult the high Lamas of the Tibetan Buddhist traditions, the Tibetan public, and other concerned people who follow Tibetan Buddhism, and re-evaluate whether the institution of the Dalai Lama should continue or not. On that basis we will take a decision. If it is decided that the reincarnation of the Dalai Lama should continue and there is a need for the Fifteenth Dalai Lama to be recognized, responsibility for doing so will primarily rest on the concerned officers of the Dalai Lama's Gaden Phodrang Trust. They should consult the various heads of the Tibetan Buddhist traditions and the reliable oath-bound Dharma Protectors who are linked inseparably to the lineage of the Dalai Lamas. They should seek advice and direction from these concerned beings and carry out the procedures of search and recognition in accordance with past tradition. I shall leave clear written instructions about this. Bear in mind that, apart from the reincarnation recognized through such legitimate methods, no recognition or acceptance should be given to a candidate chosen for political ends by anyone, including those in the People's Republic of China.

## The Dalai Lama

Dharamsala

24 September 2011

*(Translated from the Tibetan)*





Date:- 6/Jan/2012